प्रारंभिक परीक्षा

राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड - इतिहास, भूमिका और प्रभाव

संदर्भ

हाल ही में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के गिर राष्ट्रीय उद्यान में राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (NBWL) की अपनी पहली बैठक की अध्यक्षता की।

राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (NBWL) के बारे में -

- **गठन:** 2003 में (वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत वैधानिक निकाय)
- **संघटन:**
    - **अध्यक्ष:** भारत के प्रधानमंत्री
    - **उपाध्यक्ष:** केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री
    - **सदस्य - 47**
        - संसद सदस्य (3): 2 (लोकसभा) + 1 (राज्यसभा)
        - गैर सरकारी संगठनों के 5 प्रतिनिधि।
        - 10 प्रख्यात पारिस्थितिकीविद्, संरक्षणवादी और पर्यावरणविद्।
        - सेना प्रमुख, प्रमुख मंत्रालयों के सचिवों सहित अन्य सदस्य: सूचना एवं प्रसारण, रक्षा, जनजातीय मामले आदि।

NBWL की स्थायी समिति:

- **यह NBWL का एक उप-निकाय है जिसे प्रमुख निर्णय लेने की शक्तियाँ सौंपी गई हैं। यह राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों के 10 किलोमीटर के भीतर संरक्षित क्षेत्रों या वन भूमि को प्रभावित करने वाली विकास परियोजनाओं के मूल्यांकन के लिए जिम्मेदार है।**
- **अध्यक्ष**: केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री
- **सदस्य**: NBWL के सदस्यों में से उपाध्यक्ष द्वारा नामित 10 सदस्य
- **इसकी बैठक हर 3 महीने में होती है।**
- स्थायी समिति के निर्णय अनुशंसात्मक होते हैं, जिन्हें पर्यावरण मंत्रालय रद्द कर सकता है।

- **कार्य:**
    - वन्यजीव संरक्षण एवं विकास के लिए नीतियों और कार्यक्रमों पर केंद्र तथा राज्य सरकारों को सलाह देता है।
    - वन्यजीव और उसके उत्पादों के अवैध व्यापार को रोकता है तथा अवैध शिकार गतिविधियों को नियंत्रित करता है।
    - राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और अन्य संरक्षित क्षेत्रों की स्थापना की सिफारिश करता है।
    - इसमें वन्यजीव संबंधी सभी मामलों की समीक्षा करने और राष्ट्रीय उद्यानों तथा अभयारण्यों में एवं उसके आसपास परियोजनाओं को मंजूरी देने की शक्ति है।

राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों की सीमाओं में कोई भी परिवर्तन राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की मंजूरी के बिना नहीं किया जा सकता।

NBWL के इर्द-गिर्द आलोचना और विवाद -

- **वन्यजीव क्षेत्रों में विकास परियोजनाओं को मंजूरी:** NBWL ने कई विवादास्पद विकास परियोजनाओं को मंजूरी दी है, जिसके कारण पारिस्थितिकीविदों की आलोचना हुई है।

- **उदाहरण:**
    - **केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना (दौधन बांध)**
        - पन्ना राष्ट्रीय उद्यान एवं टाइगर रिजर्व का लगभग 100 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र जलमग्न हो जाएगा।
    - **होल्लोंगापार गिब्बन अभयारण्य (असम) में तेल अन्वेषण परियोजना**
        - यह भारत की एकमात्र वानर प्रजाति हूलॉक गिब्बन का निवास स्थान है।
    - **गैलेथिया बे अभयारण्य (अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह) की अधिसूचना रद्द**
        - लुप्तप्राय लेदरबैक समुद्री कछुओं के लिए महत्वपूर्ण घोंसला बनाने का स्थान।
- **उचित सदस्यों के बिना लगातार बैठकें**: 2014 से, संरक्षण विशेषज्ञों की आवश्यक संख्या के बिना 50 स्थायी समिति की बैठकें आयोजित की गई हैं।

NBWL की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि -

- **भारतीय वन्यजीव बोर्ड (IBWL) से विकास**
    - मूल रूप से केंद्रीय वन्यजीव बोर्ड (1952) के रूप में स्थापित।
    - **1952 में इसका नाम बदलकर भारतीय वन्यजीव बोर्ड (IBWL) कर दिया गया।**
    - श्री जयचमराजा वाडियार (मैसूर के महाराजा) इसके पहले अध्यक्ष थे।
- **IBWL का प्रमुख योगदान:**
    - मोर को राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया (1961)।
    - एशियाई शेरों के लिए गिर राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना की।
    - बाघ को राष्ट्रीय पशु घोषित किया।
    - प्रोजेक्ट टाइगर (1973) की नींव रखी।
- **महत्वपूर्ण अध्यक्षताएं एवं बैठकें:**
    - **इंदिरा गांधी (1980 का दशक):** वन्यजीव नीतियों को मजबूत किया, केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान) बनाया, राष्ट्रीय वन्यजीव कार्य योजना (1983) को अपनाया।
    - **1988-1997**: कोई IBWL बैठक आयोजित नहीं की गई।
    - **2003: प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के तहत IBWL को NBWL के रूप में पुनर्गठित किया गया।**
- **प्रधानमंत्रियों की अध्यक्षता में बैठकें:**
    - **अटल बिहारी वाजपेयी (2003)**: पहली NBWL बैठक।
    - **मनमोहन सिंह (2004-2012)**: 5 पूर्ण-बैठकों की अध्यक्षता की।
    - **नरेन्द्र मोदी (2025)**: अपनी पहली NBWL बैठक की अध्यक्षता की।

स्रोत: **Indian Express - NBWL**

सोलर फेंसिंग/इलेक्ट्रिक फेंसिंग की स्थापना

संदर्भ

केरल वन विभाग ने जंगली हाथियों को मानव बस्तियों में आने से रोकने के लिए कन्नूर जिले में सोलर फेंसिंग का निर्माण शुरू किया है।

इलेक्ट्रिक फेंसिंग के बारे में -

- **हाथी-बाड़ (इलेक्ट्रिक फेंसिंग) से तात्पर्य जानवरों, विशेष रूप से हाथियों को मानव बस्तियों या कृषि क्षेत्रों में प्रवेश करने से रोकने के लिए विद्युतीकृत बाधाओं के उपयोग से है।**
- **सौर ऊर्जा** से संचालित होने पर इसे **सोलर फेंसिंग भी कहा जाता है**।
- जब हाथी (और अन्य जानवर) जमीन पर खड़े होकर बाड़(फेंसिंग) को छूते हैं तो उन्हें गैर-घातक झटका लगता है।

इलेक्ट्रिक फेंसिंग कैसे काम करती है?

- किसी सर्किट के काम करने के लिए बिजली को पूरे लूप में यात्रा करने की ज़रूरत होती है। अधूरे सर्किट में बिजली का प्रवाह रुक जाता है।
- इसी प्रकार, एकल-स्ट्रैंड फेंसिंग में भी विद्युत झटका तभी लगेगा जब सर्किट पूरा हो जाएगा।
- **जब कोई हाथी विद्युत प्रवाहित तार को छूता है, तो विद्युत धारा फेंसिंग से प्रवाहित होकर हाथी के शरीर से होकर जमीन में प्रवेश करती है, तथा वापस एनर्जाइजर में पहुंचती है, जिससे परिपथ पूरा हो जाता है तथा हाथी को गैर-घातक झटका लगता है।**

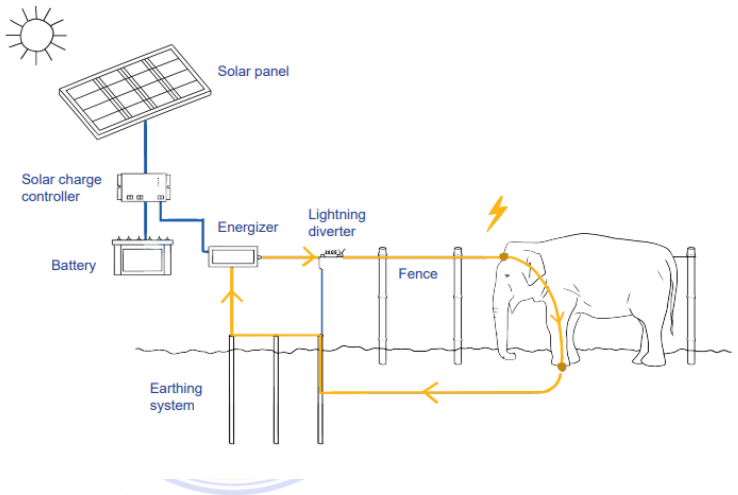

संघर्ष शमन के वैकल्पिक तरीके

- **बायो फेंसिंग लगाना**: प्राकृतिक अवरोध के रूप में कांटेदार पौधों या मिर्च-आधारित फेंसिंग का उपयोग करना।
- **पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ**: एसएमएस अलर्ट, ड्रोन और हाथियों की गतिविधियों की एआई-आधारित ट्रैकिंग।
- **सामुदायिक भागीदारी**: फेंसिंग की निगरानी और रखरखाव में स्थानीय समुदायों को शामिल करना।

स्रोत: The Hindu - Solar Fencing

अन्वेषण लाइसेंस (EL) की पहली किश्त की नीलामी

संदर्भ

खान मंत्रालय ने अन्वेषण लाइसेंस (**EL**) नीलामी का नियंत्रण राज्य सरकारों से लेने के लिए नियमों में संशोधन करने के पांच महीने बाद**,** अन्वेषण लाइसेंस (**EL**) नीलामी की पहली किस्त शुरू कर दी है।

अन्वेषण लाइसेंस (EL) क्या है?

- **अन्वेषण लाइसेंस(EL) एक परमिट है जो निजी या सरकारी संस्थाओं को भूमि के विशिष्ट ब्लॉकों में प्रारंभिक चरण के खनिज अन्वेषण के लिए दिया जाता है।**
- EL धारक खनिज भंडारों की उपस्थिति, गुणवत्ता और मात्रा का सर्वेक्षण, परीक्षण और मूल्यांकन कर सकते हैं।
- यदि व्यवहार्य खनिज पाए जाते हैं, तो ब्लॉक को खनन लाइसेंस (**ML**) के लिए नीलाम कर दिया जाता है, जिससे वाणिज्यिक निष्कर्षण की अनुमति मिल जाती है।

EL नीलामी का महत्व -

- **आयात निर्भरता कम होती है:**
  - भारत लिथियम, कोबाल्ट, निकल और दुर्लभ मृदा तत्वों (आरईई) का आयात करता है, जो बैटरी, अर्धचालक और रक्षा प्रौद्योगिकी के लिए महत्वपूर्ण हैं।
  - EL नीलामी से घरेलू खनिज उत्पादन बढ़ेगा, जिससे चीन, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका पर निर्भरता कम होगी।
- **खनन में निजी निवेश को प्रोत्साहित करता है:**
  - इससे पहले केवल जीएसआई और एमईसीएल जैसी सरकारी एजेंसियां ही अन्वेषण का कार्य करती थीं।
  - EL जूनियर खनन कम्पनियों को अन्वेषण करने की अनुमति देता है, जिससे प्रतिस्पर्धी खनिज बाजार का निर्माण होता है।
- **खनिज खोज में तेजी:**
  - निजी कंपनियां एआई-आधारित खनिज पहचान, भूभौतिकीय सर्वेक्षण और रिमोट सेंसिंग जैसी उन्नत अन्वेषण तकनीक ला सकती हैं।
- **सरकार के राजस्व में वृद्धि:**
  - खोजे गए खनिज ब्लॉकों की खनन लाइसेंस (ML) के लिए नीलामी की जाती है, जिससे सरकार के लिए रॉयल्टी, प्रीमियम भुगतान और राजस्व उत्पन्न होता है।

अगस्त 2023 में EL के लिए प्रमुख संशोधन -

- **अन्वेषण लाइसेंस (EL) की शुरूआत:**
  - इससे पहले, केवल सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियां ही गहरे और महत्वपूर्ण खनिजों का अन्वेषण कर सकती थीं।
  - संशोधन निजी कम्पनियों को नीलामी के माध्यम से EL प्राप्त करने की अनुमति देता है।
- **EL नीलामी की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार को हस्तांतरित करना:**
  - राज्य सरकारें नीलामी करने में धीमी थीं।
  - अक्टूबर 2023 में, खान मंत्रालय ने तेजी से और अधिक समन्वित अन्वेषण सुनिश्चित करने के लिए EL नीलामी प्रक्रिया को अपने हाथ में ले लिया।
- **रिवर्स बिडिंग नीलामी प्रणाली:**
  - EL उन बोलीदाताओं को प्रदान किया जाता है जो अंतिम खनन लाइसेंस (ML) धारक द्वारा भुगतान किए जाने वाले प्रीमियम का सबसे कम प्रतिशत उद्धृत करते हैं । ➞ लागत प्रभावी अन्वेषण को प्रोत्साहित करना।
- **खोजकर्ताओं के लिए वैधता और आय लाभ:**

- EL धारकों को व्यवहार्य खनिज भंडारों की खोज हो जाती है तो वे खनन राजस्व से 50 वर्षों तक लाभान्वित हो सकते हैं।

- **गहरे स्थित एवं महत्वपूर्ण खनिजों का कवरेज:**
  - EL अब लिथियम, सोना, तांबा, जस्ता, आरईई, वैनेडियम, प्लैटिनम-समूह तत्व (पीजीई), टैंटालम और हीरे जैसे प्रमुख खनिजों पर लागू होता है ।

स्रोत: **Indian Express - EL**

स्वदेश दर्शन योजना

संदर्भ

केंद्र सरकार ने राज्य सरकारों के साथ साझेदारी में SD2.0 और CBDD योजना के तहत पूरे भारत में 116 नए पर्यटन स्थलों को मंजूरी दी है।

स्वदेश दर्शन योजना के बारे में -

- **इसे पर्यटन मंत्रालय द्वारा 2015 में लॉन्च किया गया था।**
- **इस योजना का उद्देश्य पूरे भारत में थीम आधारित पर्यटन सर्किटों का एकीकृत विकास करना है।**
- यह राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों को पर्यटन अवसंरचना विकसित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- **प्रमुख विशेषताऐं:**
    - **थीम-आधारित सर्किट:** विशिष्ट थीम के माध्यम से पर्यटन को बढ़ावा देता है।
    - **बुनियादी ढांचे का विकास:** सड़क संपर्क, साइनेज, पर्यटक सुविधाएं और बुनियादी सुविधाओं के लिए धन मुहैया कराया जाता है।
    - **सरकारी सहायता:** केन्द्र सरकार द्वारा 100% वित्त पोषण।
    - **राज्य कार्यान्वयन:** राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्रों के माध्यम से क्रियान्वित।

स्वदेश दर्शन 2.0 (SD2.0) -

- **इसे 2022 में लॉन्च किया गया।**
- फोकस सर्किट-आधारित से गंतव्य-आधारित दृष्टिकोण की ओर स्थानांतरित किया गया।
- इसने सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) को प्रोत्साहित किया।
- **प्रमुख फोकस क्षेत्र:** जनजातीय पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन और विरासत पर्यटन।

चुनौती-आधारित गंतव्य विकास (CBDD) (SD2.0 के अंतर्गत उप-योजना) -

- यह चुनिंदा स्थलों के समग्र विकास को बढ़ावा देता है।
- बेहतर सुविधाओं और ब्रांडिंग के माध्यम से आगंतुकों के अनुभव को बेहतर बनाता है।

स्वदेश दर्शन के अंतर्गत पर्यटन सर्किटों की सूची -

- **बौद्ध सर्किट** – बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात
- **रामायण सर्किट** -अयोध्या,चित्रकूट,रामेश्वरम
- **हिमालयन सर्किट** - जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड
- **तटीय सर्किट** - महाराष्ट्र, केरल, गोवा, तमिलनाडु
- **हेरिटेज सर्किट** - राजस्थान, मध्य प्रदेश, असम
- **वन्यजीव सर्किट** – असम, मध्य प्रदेश, राजस्थान
- **जनजातीय सर्किट** – छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश
- **इको सर्किट** - केरल, उत्तराखंड, मिजोरम
- **उत्तर-पूर्व सर्किट** – अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैंड
- **आध्यात्मिक सर्किट** – महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, केरल

स्रोत: **The Hindu - 116 new tourist spots**

इसरो का सफल अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग (स्पैडेक्स) और अनडॉकिंग प्रक्रिया

संदर्भ

इसरो ने अपने दो प्रायोगिक उपग्रहों, **SDX01(चेज़र) और SDX02(टारगेट) को सफलतापूर्वक अनडॉक कर दिया है।**

स्पैडेक्स (अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग) के बारे में -

- **इसका उद्देश्य अंतरिक्ष में चलते समय दो उपग्रहों की डॉकिंग और अनडॉकिंग का प्रदर्शन करना था।**
- यह 2 छोटे अंतरिक्ष यान - चेज़र और टारगेट से बना है। (प्रक्षेपण यान- PSLV C-60)
- दोनों अंतरिक्ष यान एक साथ लेकिन स्वतंत्र रूप से 55 डिग्री झुकाव पर 470 किलोमीटर चौड़ी गोलाकार कक्षा में प्रक्षेपित किए जाएंगे और लगभग 66 दिनों के स्थानीय समय चक्र के साथ।
- **चरण:**
    - **रेंडेज़वस** - 2 अंतरिक्ष यान की कक्षाओं को संरेखित करना
    - **डॉकिंग** – 2 अंतरिक्ष यान को कनेक्ट करना
    - **अनडॉकिंग** - 2 अंतरिक्ष यान को डिस्कनेक्ट करना
- **उद्देश्य:**
    - **प्राथमिक उद्देश्य - डॉकिंग कार्य:** उपग्रह कक्षा में रहते हुए डॉकिंग (जुड़ना) और अनडॉकिंग (अलग होना) का प्रदर्शन करेंगे।
    - **द्वितीयक उद्देश्य - विद्युत शक्ति हस्तांतरण:** डॉक किए गए अंतरिक्ष यान के बीच विद्युत शक्ति का हस्तांतरण। यह निम्न के लिए एक महत्वपूर्ण तकनीक है:
        - अन्तरिक्ष रोबोटिक्स
        - समग्र अंतरिक्ष यान नियंत्रण
        - अनडॉकिंग के बाद पेलोड संचालन

डॉकिंग और अनडॉकिंग प्रयोग का महत्व - भविष्य के इसरो मिशनों के लिए महत्वपूर्ण

- **चन्द्रयान-4**: एक चंद्र नमूना वापसी मिशन, जिसके लिए चन्द्रमा और पृथ्वी की कक्षा में कई बार डॉकिंग की आवश्यकता होगी।
- **भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (Indian Space Station)**: 2035 के लिए योजना बनाई गई है, जिसके लिए अंतरिक्ष में मॉड्यूलर संयोजन की आवश्यकता होगी।
- **मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन**: भविष्य के अंतरिक्ष यात्री मिशनों को चालक दल और कार्गो स्थानांतरण के लिए डॉकिंग की आवश्यकता होगी।

भारतीय डॉकिंग सिस्टम (इसरो का स्वदेशी डॉकिंग तंत्र) -

- इसरो ने प्रयोग के लिए अपना स्वयं का भारतीय डॉकिंग सिस्टम विकसित किया।
- यह अंतर्राष्ट्रीय डॉकिंग सिस्टम मानक (**IDSS)** के समान है लेकिन इसमें प्रमुख अंतर हैं:
    - **एंड्रोजिनस प्रणाली**: चेज़र और टारगेट दोनों उपग्रहों में समान डॉकिंग तंत्र हैं।
    - **सरलीकृत डिजाइन**:
        - IDSS डॉकिंग के लिए 24 मोटर्स का उपयोग करता है।
        - इसरो की प्रणाली केवल 2 मोटरों के साथ डॉकिंग प्राप्त करती है।

तथ्य

- इस उपलब्धि के साथ, **भारत अब डॉकिंग और अनडॉकिंग क्षमता वाले चार देशों में शामिल हो गया है: संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन और भारत।**

स्रोत: [Indian Express - Undocking of satellites]

समाचार संक्षेप में

प्रतिबिम्ब मॉड्यूल

- केंद्रीय गृह मंत्रालय के भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) ने अपराधियों के स्थानों पर नज़र रखने और अपराध के बुनियादी ढांचे का नक्शा बनाने के लिए 'प्रतिबिंब' मॉड्यूल लॉन्च किया।

प्रतिबिंब के बारे में -

- **'प्रतिबिंब' केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) द्वारा लॉन्च किया गया एक साइबर अपराध ट्रैकिंग और मैपिंग प्लेटफॉर्म है।**
- इसे अपराधियों के स्थानों पर नज़र रखने, अपराध के बुनियादी ढांचे का मानचित्रण करने और पूरे भारत में साइबर अपराध जांच का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह मंच तीव्र और अधिक कुशल साइबर अपराध समाधान के लिए कानून प्रवर्तन एजेंसियों (एलईए) के बीच समन्वय को बढ़ाता है।
- प्रतिबिम्ब I4C का हिस्सा है, जिसे समन्वित तरीके से साइबर अपराध से निपटने के लिए स्थापित किया गया था।
- **अन्य I4C पहलों में शामिल हैं:**
    - **समन्वय** - डेटा-शेयरिंग और एनालिटिक्स प्लेटफ़ॉर्म।
    - **राष्ट्रीय साइबर फोरेंसिक प्रयोगशाला (जांच)** - कानून प्रवर्तन को फोरेंसिक सहायता प्रदान करती है।
    - **साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल** - साइबर अपराध शिकायतों के लिए सार्वजनिक मंच।

स्रोत: **Business Standard- Pratibimb Module**

संपादकीय सारांश

प्रगति और संकीर्णता के बीच भारत का विकल्प

संदर्भ

भाषाई नीतियों से भारत की वैश्विक और प्रौद्योगिकीय महत्वाकांक्षाओं को नुकसान पहुंचने का खतरा है।

वैश्विक और तकनीकी क्षेत्र में अंग्रेजी का महत्व -

- **व्यापार और प्रौद्योगिकी की वैश्विक भाषा:** अंग्रेजी वैश्विक व्यापार, व्यावसायिक संचार और तकनीकी अनुसंधान पर हावी है।
    - वैश्विक तकनीकी पाठ्यक्रमों, शोध पत्रों और पेटेंटों का 93% से अधिक भाग अंग्रेजी में प्रकाशित होता है।
    - एआई, साइबर सुरक्षा और डेटा विज्ञान क्षेत्र सहयोग और नवाचार के लिए अंग्रेजी पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
- **उच्च शिक्षा और रोजगार का प्रवेश द्वार:** अधिकांश वैश्विक विश्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थान शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी का उपयोग करते हैं।
    - 82% दूरस्थ तकनीकी भूमिकाओं के लिए अंग्रेजी दक्षता की आवश्यकता होती है।
    - अंग्रेजी कौशल की कमी से उच्च विकास वाले क्षेत्रों तक पहुंच 68%-85% तक कम हो जाती है।
- **कूटनीति और वैश्विक प्रभाव:** अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन, आईएमएफ, आदि) की कामकाजी भाषा है।
    - यह मीडिया, मनोरंजन और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों सहित सॉफ्ट पावर के लिए आवश्यक है।
- **सांस्कृतिक और तकनीकी आदान-प्रदान:** अंग्रेजी हॉलीवुड से लेकर के-पॉप और तकनीकी मंचों तक वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करती है।
    - यह वैश्विक ज्ञान नेटवर्क और नवाचार केंद्रों तक पहुंच को सक्षम बनाता है।
- **एआई और डिजिटल अर्थव्यवस्था:** एआई मॉडल और कोडिंग भाषाएं मुख्य रूप से अंग्रेजी पर आधारित हैं।
    - डेटा साझाकरण, वैश्विक सहयोग और उद्योग मानक सभी अंग्रेजी-संचालित हैं।
- **पर्यटन और आतिथ्य:** पर्यटन, आतिथ्य और ग्राहक सेवा उद्योगों के लिए अंग्रेजी वैश्विक मानक है।
    - जिन देशों में अंग्रेजी भाषा में दक्षता अधिक होती है, वे अधिक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों और व्यावसायिक निवेशों को आकर्षित करते हैं।

भारत में मुद्दे -

- **भाषाई राष्ट्रवाद बनाम आर्थिक आवश्यकता:** शिक्षा और सरकारी नीतियों में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देना वैश्विक प्रतिस्पर्धा को कमजोर करता है।
    - महाराष्ट्र में सरकारी कार्यालयों में मराठी भाषा को अनिवार्य बनाना इस तनाव को दर्शाता है।
- **शैक्षिक असमानता:** केवल 10% भारतीय ही अंग्रेजी भाषा में पारंगत हैं, जिससे दो-स्तरीय शिक्षा प्रणाली बन गई है।
    - निजी स्कूल के छात्रों को वैश्विक अवसरों तक पहुंच प्राप्त होती है, जबकि सरकारी स्कूल के छात्रों को सीमित संभावनाओं का सामना करना पड़ता है।
- **रोजगार बाधाएं:** नीति आयोग ने उच्च विकास वाले क्षेत्रों में रोजगार के लिए अंग्रेजी दक्षता को एक प्रमुख बाधा के रूप में पहचाना है।
    - अंग्रेजी बोलने वाले कार्यबल की कमी के कारण उद्योगों को बाहरी प्रतिभाओं को नियुक्त करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।
- **क्षेत्रीय असमानताएं:** केरल और तमिलनाडु जैसे राज्य, जो अंग्रेजी और मातृभाषा पर जोर देते हैं, उनमें STEM नामांकन और रोजगार दर अधिक है।
    - हिंदी-प्रधान राज्य शैक्षिक और आर्थिक परिणामों में पिछड़े हुए हैं।

- **नीतिगत अस्पष्टता:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 बहुभाषिकता को बढ़ावा देती है, लेकिन प्रतिस्पर्धी कौशल के लिए अंग्रेजी को प्राथमिकता देने पर स्पष्टता का अभाव है।
    - अंग्रेजी प्रशिक्षण में व्यवस्थित निवेश की कमी से असंगत परिणाम सामने आते हैं।
- **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिरोध:** कुछ राजनीतिक और सामाजिक समूहों द्वारा अंग्रेजी दक्षता को सांस्कृतिक विश्वासघात के रूप में देखा जाता है।
    - पश्चिमी प्रभाव के प्रति प्रतिरोध अंग्रेजी सीखने में प्रतिरोध पैदा करता है।

वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाएँ -

- **चीन:** 2001 से प्राथमिक विद्यालय से ही अंग्रेजी पढ़ाई जा रही है।
    - गाओकाओ (राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा) में अंग्रेजी को मुख्य विषय के रूप में शामिल किया गया है (150 अंक)।
    - हुआवेई और अन्य प्रमुख कंपनियों के पास आंतरिक अंग्रेजी भाषा कार्यक्रम हैं।
    - अंग्रेजी दक्षता बेल्ट एंड रोड पहल के तहत चीन के वैश्विक बुनियादी ढांचे के विस्तार में सहायक है।
- **दक्षिण कोरिया:** सुनेउंग (राष्ट्रीय परीक्षा) में अंग्रेजी का हिस्सा 25% है।
    - सैमसंग और हुंडई जैसी कंपनियों को अनुसंधान एवं विकास संबंधी कार्यों के लिए अंग्रेजी की आवश्यकता होती है।
    - के-पॉप समूह वैश्विक बाज़ारों को लक्षित करने के लिए अंग्रेजी ट्रैक जारी करते हैं।
- **वियतनाम:** राष्ट्रीय विदेशी भाषा परियोजना (एनएफएलपी) 2008 में शुरू की गई, जिसे 2030 तक बढ़ाया गया।
    - 70% हाई स्कूल स्नातकों और 100% सिविल सेवकों को अंग्रेजी दक्षता के लिए लक्षित किया गया।
    - शिक्षक प्रशिक्षण और ग्रामीण डिजिटल कक्षाओं में 1.4 बिलियन डॉलर का निवेश।
    - अंग्रेजी दक्षता वियतनाम को मध्य-तकनीकी विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरने में सहायक है।
- **इजराइल:** STEM शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी में प्रवीणता अनिवार्य है।
    - अंग्रेजी पर रणनीतिक ध्यान वैश्विक अनुसंधान और नवाचार तक पहुंच सुनिश्चित करता है।
    - इजराइल का तकनीकी क्षेत्र वैश्विक सहयोग में सक्षम द्विभाषी कार्यबल से लाभान्वित है।
- **यूरोपीय संघ:** अनेक आधिकारिक भाषाओं के बावजूद, अंग्रेजी यूरोपीय संघ के संस्थानों की कार्यकारी भाषा बनी हुई है।
    - अंग्रेजी में प्रवीणता से कूटनीतिक, व्यापारिक और अनुसंधान सहयोग सुचारू रूप से चलता है।
- **सिंगापुर:** अंग्रेजी व्यापार, शासन और शिक्षा के लिए आधिकारिक भाषा है।
    - अंग्रेजी को रणनीतिक रूप से अपनाने से सिंगापुर एक वैश्विक वित्तीय और तकनीकी केंद्र के रूप में उभर सका।

भारत का भविष्य -

- **नीतिगत सुधार:** प्राथमिक स्तर से मातृभाषा शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा के लिए स्पष्ट नीतिगत अधिदेश।
    - अंग्रेजी को सांस्कृतिक खतरे के बजाय एक कौशल (कोडिंग की तरह) के रूप में समझें।
- **भाषा प्रशिक्षण में निवेश:** बड़े पैमाने पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करना।
    - अंग्रेजी भाषा कौशल के लिए डिजिटल शिक्षण प्लेटफॉर्म प्रदान करना।
- **शिक्षा प्रणाली में सुधार:** राष्ट्रीय परीक्षाओं में अंग्रेजी को मुख्य विषय के रूप में शामिल किया जाए।
    - सरकारी और निजी स्कूलों में अंग्रेजी शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करना।
- **उद्योग एकीकरण:** एआई, तकनीक और विनिर्माण क्षेत्रों के लिए अंग्रेजी प्रशिक्षण अनिवार्य करना।
    - द्विभाषी तकनीकी कार्यबल विकसित करने के लिए उद्योग-अकादमिक सहयोग को प्रोत्साहित करना।
- **वैश्विक कार्यबल तत्परता:** वैश्विक बाजारों के लिए भारत के कार्यबल को तैयार करने के लिए STEM + अंग्रेजी पर ध्यान केंद्रित करना।

    - वैश्विक एआई, साइबर सुरक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में भारतीय प्रतिभा को बढ़ावा देना।
- **भाषाई पहचान और आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता में संतुलन:** केरल का मॉडल (मातृभाषा + अंग्रेजी) एक खाका के रूप में काम कर सकता है।
    - अंग्रेजी दक्षता को सशक्तिकरण के साधन के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि सांस्कृतिक पहचान के लिए खतरा माना जाना चाहिए।

निष्कर्ष

- अंग्रेजी अब केवल औपनिवेशिक विरासत नहीं रह गई है - यह वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए एक रणनीतिक परिसंपत्ति है।
- चीन, दक्षिण कोरिया और वियतनाम जैसे देशों ने दिखा दिया है कि अंग्रेजी दक्षता सांस्कृतिक पहचान से समझौता किए बिना आर्थिक विकास को गति दे सकती है।
- भारत का जनसांख्यिकीय लाभ वैश्विक नेतृत्व की स्थिति में तभी परिवर्तित होगा जब अंग्रेजी प्रवाह को STEM और AI प्रशिक्षण के साथ मुख्यधारा में लाया जाएगा।
- भारत को अंग्रेजी को खतरे के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक अवसरों और तकनीकी प्रभुत्व के लिए एक सेतु के रूप में देखना चाहिए।

स्रोत: **The Hindu: India's choice between progress and parochialism**

आधुनिक शिखर सम्मेलन कूटनीति

संदर्भ

ट्रम्प-शैली की कूटनीतिक बैठकों से जुड़ी कमियों और जटिलताओं के बावजूद, वैश्विक चुनौतियों से निपटने में सामूहिक कार्रवाई और सहयोग की बढ़ती आवश्यकता के कारण शिखर सम्मेलन कूटनीति आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण उपकरण बनी रहेगी।

ट्रम्प-शैली की बैठकों की प्रकृति -

- ट्रम्प-शैली की कूटनीति उच्च-स्तरीय, नेता-केंद्रित संलग्नताओं की विशेषता है, जो अक्सर वास्तविकता से अधिक दिखावे को प्राथमिकता देती है।
- ये बैठकें इस प्रकार होती हैं:
    - अप्रत्याशित एवं लेन-देन संबंधी।
    - दीर्घकालिक रणनीतिक परिणामों के बजाय तात्कालिक राजनीतिक लाभ पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
    - बंद दरवाजे के पीछे की बातचीत के बजाय प्रचारित कार्यक्रम।

शिखर सम्मेलन कूटनीति का क्या अर्थ है और इसका महत्व क्या है?

शिखर सम्मेलन कूटनीति से तात्पर्य महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा और समाधान के लिए राज्य या सरकार के प्रमुखों के बीच उच्च स्तरीय बैठकों से है।

शिखर सम्मेलन कूटनीति का महत्व

- **संघर्ष समाधान और शांति स्थापना:** शिखर सम्मेलन कूटनीति ने युद्धों को समाप्त करने और शांति समझौतों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
    - **उदाहरण: मिस्र और इजरायल के बीच कैंप डेविड समझौते (1978)** के परिणामस्वरूप शांति संधि हुई।
- **रणनीतिक साझेदारियां और गठबंधन:** शिखर सम्मेलन देशों को द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों को बनाने और मजबूत करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।
    - **उदाहरण:** फरवरी 2025 में भारत -अमेरिका शिखर सम्मेलन में रक्षा सहयोग और व्यापार मुद्दों पर चर्चा हुई।
- **संकट प्रबंधन:** भू-राजनीतिक तनाव के समय, शिखर सम्मेलन प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से संघर्ष को शांत करने में मदद करते हैं।
    - **उदाहरण**: **रीगन-गोर्बाचेव शिखर सम्मेलन (1980)** ने शीत युद्ध के तनाव को कम करने में मदद की।
- **आर्थिक और व्यापार समझौते:** व्यापार बाधाओं, शुल्कों और बाजार पहुंच पर अक्सर शिखर सम्मेलनों के माध्यम से चर्चा की जाती है और उनका समाधान किया जाता है।
    - **उदाहरण:** 2025 में मोदी-ट्रम्प शिखर सम्मेलन में अमेरिका-भारत व्यापार बाधाओं और रक्षा सौदों पर चर्चा हुई।
- **जलवायु एवं वैश्विक चुनौतियाँ:** शिखर सम्मेलन जलवायु परिवर्तन और महामारी जैसे वैश्विक मुद्दों पर सामूहिक कार्रवाई को सक्षम बनाते हैं।
    - **उदाहरण**: COP28 शिखर सम्मेलन वैश्विक जलवायु कार्रवाई में तेजी लाने पर केंद्रित था।
- **सार्वजनिक कूटनीति और छवि निर्माण:** नेता वैश्विक मंच पर अपनी ताकत, नेतृत्व और प्रभाव को प्रदर्शित करने के लिए शिखर सम्मेलनों का उपयोग करते हैं।
    - **उदाहरण**: यूक्रेन संघर्ष से निपटने में ट्रम्प के तरीके ने एक निर्णायक नेता के रूप में उनकी छवि को मजबूत किया।

शिखर सम्मेलन कूटनीति की चुनौतियाँ -

- **सार का अभाव:** ऐसी बैठकों के परिणाम अक्सर अस्पष्ट या सतही होते हैं, जिनमें ठोस समझौतों की अपेक्षा राजनीतिक संदेश पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
- **शक्ति असंतुलन:** मजबूत पक्ष कमजोर देशों पर ऐसे समझौतों को स्वीकार करने के लिए दबाव डाल सकते हैं जिनमें निष्पक्षता या दीर्घकालिक व्यवहार्यता का अभाव हो।
- **सार्वजनिक तमाशा:** जब मीडिया की निगरानी में कूटनीतिक प्रक्रिया संचालित की जाती है, तो यह संघर्ष समाधान की बजाय राजनीतिक तमाशा बन जाती है।
- **लोकलुभावनवाद और राष्ट्रवाद:** मजबूत घरेलू राजनीतिक एजेंडे वाले नेता आक्रामक या संरक्षणवादी नीतियों को बढ़ावा दे सकते हैं।
    - **उदाहरण**: ट्रम्प का 'अमेरिका फर्स्ट' रुख वैश्विक सहयोग को कमजोर कर सकता है।

शिखर सम्मेलन कूटनीति का भविष्य -

- **द्विपक्षीय और लघु-पार्श्व शिखर सम्मेलनों का उदय:** विशिष्ट क्षेत्रीय मुद्दों के समाधान के लिए छोटे समूहों (जैसे QUAD और AUKUS) पर अधिक ध्यान दिया गया।
- **प्रौद्योगिकी एवं रक्षा सहयोग:** सैन्य हार्डवेयर एवं तकनीकी समझौते भविष्य के शिखर सम्मेलनों में प्रमुखता से शामिल रहेंगे।
    - **उदाहरण**: अमेरिका-भारत एफ-35 सौदा एशिया में रक्षा गतिशीलता को आकार दे सकता है।
- **वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव:** चीन का बढ़ता प्रभाव और गठबंधनों का पुनर्गठन शिखर सम्मेलन के परिणामों को प्रभावित करेगा।
    - **उदाहरण**: चीन के सैन्य विस्तार को संतुलित करने के लिए भारत पर अमेरिकी दबाव।
- **जलवायु एवं ऊर्जा सुरक्षा:** ऊर्जा परिवर्तन और महत्वपूर्ण खनिजों के लिए आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित करना मुख्य एजेंडा बिंदु होंगे।
    - **उदाहरण**: अमेरिकी समर्थन के लिए खनिज अधिकारों के व्यापार की यूक्रेन की पेशकश इस बदलाव को दर्शाती है।
- **साइबर सुरक्षा और एआई विनियमन:** भविष्य के शिखर सम्मेलनों में एआई, डेटा गोपनीयता और साइबर युद्ध को विनियमित करने पर ध्यान केंद्रित किए जाने की संभावना है।
    - **उदाहरण**: एआई गवर्नेंस पर अमेरिका, यूरोपीय संघ और चीन के बीच अपेक्षित वार्ता।

स्रोत: **The Hindu: Modern day summitry, its perils and its prospects**